Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कौमुदीमित्रानन्दरूपक में प्रयुक्त अलंकारों का वर्णन

Ravina Rameshwar Gajbhiye.

Ph.D student, Sanskrit Dept.

Savitribai Phule Pune university Pune, Maharashtra.

Email id: ravinagajbhiye2@gmail.com; Mob no. 8530930639

"प्रस्तावना"

कौमुदीमित्रानन्दरूपक संस्कृत साहित्य का एक अद्वितीय काव्य है, जिसमें काव्यात्मक सौंदर्य का बखान किया गया है। इस रचना में विभिन्न काव्य तत्वों का समावेश किया गया है, जो इसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। यह काव्य न केवल भावनाओं को व्यक्त करता है, बल्कि पाठक को एक गहन अनुभव भी प्रदान करता है। इस काव्य में ध्वनियों की पुनरावृत्ति, जिसका प्रभाव पाठक के मन में गहराई से उतरता है, पाठक को लय और संगीतिकता का अनुभव कराता है। इस तरह की विशेषताएँ काव्य के भाव को और भी गहराई देती हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य और मानवीय भावनाओं का चित्रण भी अद्वितीय है। काव्य में किसी चीज़ की तुलना से उसकी सुंदरता को और अधिक प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार, पाठक एक नई दृष्टि के साथ काव्य को देखता है। काव्य में भावनाओं की तीव्रता को दर्शाने के लिए भी अनेक उपाय किए गए हैं। कभी-कभी, भावनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है, जिससे पाठक पर प्रभाव और भी गहरा हो जाता है। इसी तरह, किसी विशेषता को सरल और सामान्य भाषा में व्यक्त किया गया है, जिससे वह अधिक सजीव हो उठती है। काव्य में विचारों की गहराई को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणों का प्रयोग किया गया है। यह न केवल पाठक को सोचने पर मजबूर करता है, बल्कि उसके मन में गहरी छाप भी छोड़ता है।

इस प्रकार, कौमुदीमित्रानन्दरूपक में विभिन्न काव्यात्मक तत्वों का समावेश इसे एक उत्कृष्ट काव्य बनाता है। ये तत्व काव्य की सुंदरता को बढ़ाते हैं और पाठक के मन में एक गहरा अनुभव छोड़ते हैं। इस काव्य की गहराई और विशिष्टता को समझने के लिए इसकी संरचना और शैली पर ध्यान देना आवश्यक है, जिससे पाठक इसके अद्वितीय भाव और सौंदर्य का अनुभव कर सके।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

१. "अनुप्रास"

अनुप्रास का अर्थ है ध्वनियों की पुनरावृत्ति। यह अलंकार कविता की लय और संगीतत्व को बढाता है। कौमुदीमित्रानन्दरूपक में अनुप्रास का अत्यधिक प्रयोग किया गया है, जिससे पाठक की रुचि बनी रहती है। आचार्य विश्वनाथ ने अनुप्रास को परिभाषित करते हुए कहा है कि स्वर की विषमता होने पर भी व्यञ्जन की सरूपता होने को अनुप्रास कहते हैं।

अनुप्रासालङ्कार का लक्षण:-

अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।(साहित्यदर्पण-१०/३)

कौमुदी मित्रानंद नाटक में अनुप्रास अलंकार का उदाहरण :-

त्वमेवास्य स्वामी त्वमसि जनकस्त्वं च जननी
गुरुत्वं, बन्धुस्त्वं त्वमसि परमं मित्रमपि च।
त्वया येनाऽऽकृष्टास्त्रिभुवनजनग्रासरभस-
प्रवेल्लज्जितह्वाग्रात् प्रसभमयमास्यात् पितृपतेः।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-५/१२)

तुम ही इसके स्वामी हो, तुम ही पिता और तुम ही माता हो। इसके गुरु भी तुम हो, बन्धु भी तुम हो और परम मित्र भी तुम ही हो। क्योंकि तुमने ही इसको यमराज के त्रिलोक के प्राणियों का भक्षण करने को आतुर लपलपाती हुई जिह्वा वाले मुख से बलपूर्वक बाहर खींच लिया है। इस पद्य में त्व, म, न, य आदि वर्गों की अनेकशः आवृत्ति हुई है। अतः अनुप्रास अलङ्कार है।

२. "यमक" -

यमक का तात्पर्य है एक ही शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग। यह अलंकार विचारों को रोचकता प्रदान करता है। अर्थ के होने पर भित्र अर्थवाले स्वरों और व्यञ्जनों के समुदाय की उसी क्रम से आवृत्ति को यमक कहते हैं। यमकालङ्कार का लक्षण:-

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।। (साहित्यदर्पण-१०/८)

कौमुदीमित्रानंद में उपलब्ध यमक के उदाहरण :-

धावं धावमयं पुरः पुरजनः किं कान्दिशीको भ्रम-
त्येषोऽपि श्रुतिदुर्भगः प्रतिदिशं हङ्कानिनादः कथम्?
रूध्यन्तेध्वनि किं पदातिपटलैरागन्तवो जन्तवः।
कस्मात् कावचिका निकुञ्जकुहराण्यावृण्वते वाजिभिः।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-४/९)

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

यह भयभीत नगरवासी दौड़ते-दौड़ते क्यों भाग रहा है? सभी दिशाओं में यह श्रुतिकटु हाहाकार ध्वनि क्यों हो रही है? मार्ग पर आने जाने वाले लोग सैनिकों द्वारा क्यों कुचले जा रहे है? और कवचधारी (सैनिक गण) किस कारण घोड़े द्वारा लतामण्डपों को उजाड़ रहे है? इस पद्य में 'पुर' शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है तथा उसके अर्थ भी भिन्न है। प्रथम 'पुर' का अर्थ 'नगर' तथा द्वितीय 'पुर' शब्द निरर्थक है जो जन शब्द के साथ मिलकर 'प्रजा' अर्थ को द्योतित कर रहा है। अतः यहाँ यमक अलङ्कार है।'

३. उपमा-

उपमा का अर्थ है किसी वस्तु या गुण की तुलना दूसरी वस्तु से करना। उपमा का लक्षण बताते हुए आचार्य विश्वनाथ ने कहा है कि एक वाक्य में उपमान और उपमेय दो पदार्थों का वैधर्म्य से रहित वाच्य सादृश्य को "उपमा" कहते हैं। वैसे कुवलयानन्द में उपमा के ८ भेद बताये गये हैं उनमें से यहाँ पूर्णोपमालङ्कार को लिया गया है। उपमालङ्कार का लक्षण:-

साम्यं वाच्यमवैधम्र्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।। (साहित्यदर्पण-१०/१४)

कौमुदीमित्रानंद में उपमा का उदाहरण :-

कौमुदीमित्रानन्दरूपक में उपमा का उपयोग प्राकृतिक सौंदर्य और भावनाओं को व्यक्त करने में किया गया है।

अस्ताद्रिमाश्रयन्तं प्रदोषसंहृतसमस्तवसुसारम्।
वोढ्रारं कुलवनितेव मित्रमनुसरति दिनलक्ष्मी।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-३/२२)

दिनलक्ष्मी प्रदोष से प्रतिबिन्धित किरण समूह वाले एवं अस्ताचल का आश्रयण करते हुए सूर्य का कुलवधू की भाँति अनुसरण कर रही है। यहाँ दिनलक्ष्मी रूपी उपमेय की कुलवधू रूपी उपमान से उपमा दी गई है। जिसमें 'इव' उपमा वाचक शब्द तथा 'अनुसरण कर रही है', यह साधारण धर्म है। अतः यहाँ पूर्णोपमा है।

४. रुपक –

रूपक का तात्पर्य है किसी वस्तु को उसकी विशेषता के अनुसार भिन्न वस्तु के रूप में प्रस्तुत करना। यह अलंकार भावनाओं की गहराई को प्रकट करने के लिए उपयोगी होता है। निषेध रहित उपमेय से रूपित उपमान के आरोप से रूपक अलङ्कार होता है।

रूपकालङ्कार का लक्षण:-

रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे। (साहित्यदर्पण-१०/२८)

कौमुदीमित्रानंद में रूपक का उदाहरण :

लक्ष्मीपयोधरोत्सङ्गसुभगङ्करणांसभूः।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कुमारो रङ्गशालाया मध्यमद्य प्रवेक्ष्यति।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-५/१)

लक्ष्मी के पयोधररूपी गोद को सुशोभित करने वाले भगवान विष्णु के अंश से उत्पन्न राजकुमार (लक्ष्मीपति) आज रङ्गशालापुरी में प्रवेश करने वाले है। यहाँ पयोधर उपमेय में उपमान 'गोद' का आरोप किया गया है, अतः रूपक अलङ्कार है।

५. काव्यलिङ्ग-

वाक्यार्थ या पदार्थ किसी का हेतु हो तो उसे काव्यलिङ्ग अलङ्कार कहते हैं।

काव्यलिङ्गालङ्कार का लक्षण:-

हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्ग निगद्यते। (साहित्यदर्पण-१०/६३)

कौमुदीमित्रानंद नाटक में काव्यलिङ्ग का उदाहरण :-

सुखाकरोति संयोगस्तथा न तव कौमुदि।
मैत्रेयस्य परित्यागो यथा दुःखाकरोति माम् ।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-४/७)

कौमुदि! मुझको तुम्हारा संयोग उतना सुखी नहीं कर रहा है, जितना कि मैत्रेय का वियोग दुःखी कर रहा है। यहाँ पूर्वार्द्ध में संयोग द्वारा सुख की प्राप्ति न होने का कारण मैत्रेय का वियोग बतलाया गया है अतः काव्यलिङ्ग अलङ्कार है।

६. उत्प्रेक्षा-

उपमेय का उपमान स्वरूप से संभावना करने को उत्प्रेक्षा कहते हैं। उत्प्रेक्षालङ्कार का लक्षण:-

भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना। (साहित्यदर्पण-१०/५०)

कौमुदीमित्रानंद नाटक में उत्प्रेक्षा का उदाहरण :-

अमृतजलधेः पुण्यैस्तैस्तैर्निमज्जितमूर्मिभिः
मृदुभिरभितो देवस्येन्दोर्मरीचिभिरञ्चितम्।
निजवपुरिदं मन्ये तस्याः कुरङ्गकचक्षुषो
विरतिविमुखैः स्निग्धैर्दिग्धं कटाक्षनिरीक्षितैः।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-३/२)

उस मृगनयनी के आसक्ति युक्त स्निग्ध कटाक्ष से लिप्त मेरा शरीर मानो अमृतजलधि (क्षीरसागर) की पवित्र शीतल लहरों से नहाया हुआ और चन्द्रदेव की शीतल किरणों से सर्वतः सुशोभित हो गया है। प्रकृत पद्य में मृगनयनी के आसक्ति युक्त स्निग्ध कटाक्ष से लिप्त शरीर की अमृतजलधि (क्षीर सागर) की पवित्र शीतल लहरों से नहाये होने की सम्भावना व्यक्त होने की संभावना व्यक्त होने से एवं 'मन्ये' इस उत्प्रेक्षा वाचक शब्द का प्रयोग होने से उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

७. "अतिशयोक्ति"

अतिशयोक्ति का अर्थ है किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना। इस काव्य में यह तत्व भावनाओं की तीव्रता को दर्शाने के लिए प्रयोग किया गया है। अध्यवसाय के सिद्ध होने पर अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है।

अतिशयोक्ति अलङ्कार का लक्षण:-

सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते। (साहित्यदर्पण-१०/४६)

कौमुदीमित्रानंद में अतिशयोक्ति का उदाहरण :-

कासामपि अङ्गयष्टिः भूष्यते भूषणैः तरूणीनाम्।
भूष्यते पुनः कासामपि भूषणमङ्गयष्टिना।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-३/६)

किसी तरूणियों की अङ्गयष्टि (शरीर) तो आभूषणों से सुशोभित होती है और किन्हीं तरूणियों की अङ्गयष्टि से ही आभूषणों की शोभावृद्धि होती है। यहाँ तरूणियों की अङ्गयष्टि (शरीर) से आभूषणों की शोभा वृद्धि कराने के कारण अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

८. "अर्थान्तरन्यास"

इस अलंकार में किसी विशेष वस्तु या व्यक्ति का सामान्य नाम से उल्लेख किया जाता है। कौमुदीमित्रानन्दरूपक में इसे विशेष रूप से प्रकट किया गया है। जहाँ विशेष से सामान्य या सामान्य से विशेष अथवा कारण से कार्य या कार्य से कारण साधर्म्य या वैधर्म्य लक्षित होता है तो वहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है। अर्थान्तरन्यासालङ्कार का लक्षण:-

सामान्यं वा विशेषेण विशेषस्तेन वा यदि।
कार्य च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते।
साधम्र्येणेतरेणार्थान्तरन्यासोऽष्टधा ततः।। (साहित्यदर्पण-१०/६१-६२)

कौमुदीमित्रानंद में अर्थान्तरन्यास का उदाहरण :-

न मे गोत्रं वेद प्रकृतिमपि (नैवाप्यभिजनं)
स्वभावस्थं किञ्चोपकृतमपि नास्यां किमपि मे।
तथाप्येषा बन्धूनमुचदसिताक्षी मम कृते
पुरन्ध्रीणां प्रेमग्रहिलमविचारं खलु मनः।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-४/२)

न मेरा गोत्र जाना, न स्वभाव जाना, न ही मेरे पूर्वजो और कुटुम्बजनों के विषय में कुछ जाना और इस पर मेरा कोई स्वभाविक उपकार भी नहीं है, फिर भी इस कृष्णाक्षी (कौमुदी) ने मेरे लिए अपने बन्धजनों का परित्याग कर दिया। महिलाओं का प्रेमासक्त मन वस्तुतः अविचारणीय (समझ से परे) है। प्रस्तुत पद्य में प्रथम तीन चरणों में कहे गये विशेष वाक्य का

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

अन्तिम चरण के सामान्य वाक्य से समर्थन किया गया है। अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार परिलक्षित हो रहा है।

९. "तुल्ययोगिता"

तुल्ययोगिता का अर्थ है समानता का भाव। इसमें विभिन्न वस्तुओं के बीच समानता स्थापित की जाती है। प्रस्तुत या अप्रस्तुत पदार्थों का जब एक धर्म अर्थात् गुण या क्रिया से अभिसम्बन्ध हो तो तुल्योगिता अलङ्कार होता है। तुल्ययोगितालङ्कार का लक्षण:-

पदार्थानां प्रस्तुतानामन्येषां वा यदा भवेत्।
एकधर्माभिसम्बन्धः स्यात्तदा तुल्ययोगिता ।। (साहित्यदर्पण-१०/४८)

कौमुदीमित्रानंद में तुल्ययोगिता का उदाहरण:-

प्राचीनमञ्चति वियत् पृथुशोककोक- कान्ताकपोलपुलकौपयिकं दिनेशः।
श्रान्ता इवास्ततटकुट्टिममाश्रयन्ति, राजीवजीवितहृतो हरिणाङ्कपादाः।।

(कौमुदीमित्रानन्दरुपक-४/७)

अत्यधिक शोकाकुल चक्रवाकी के कपोलो को रोमाञ्चित करने वाले सूर्यदेव पूर्वदिशा को सुशोभित कर रहे है और कमल के जीवन का हरण करने वाले श्रान्त हुए से चन्द्रदेव अस्ताचल रूपी कुटियाँ का आश्रयण कर रहे हैं। यहाँ 'आश्रयन्ति' रूप एक क्रिया का सूर्यदेव के आश्रय के रूप में एवं चन्द्रदेव के आश्रय के रूप में वर्णन होने से तुल्योगिता नामक अलङ्कार है।

१०."स्वभावोक्ति"

स्वभावोक्ति में किसी व्यक्ति या वस्तु की स्वाभाविक विशेषता का उल्लेख किया जाता है। यह पाठक को विषय के स्वभाव से अवगत कराता है। बालक आदि वस्तु के दुज्ञेय उनके चेष्टा और स्वरूप के वर्णन को स्वभावोक्ति कहते हैं। स्वभावोक्ति अलङ्कार का लक्षण:-

स्वभावोक्तिर्दुरूहार्थस्वक्रियारूपवर्णनम्। (साहित्यदर्पण-१०/९३)

कौमुदीमित्रानन्दन में स्वभावोक्ति का उदाहरण:-

ग्लास्नुध्वान्ततर्तिमुखेषु ककुभां स्थास्नुः प्रतापोच्चयो
मीलत्युत्पत्निनीवनं कमलिनीखण्डं समुन्मीलति।
मज्जत्यम्बरवारिधावुडुगणो, दिक्चक्रमुन्मज्जति
प्राचीं चुम्बति चण्डरोचिषि जगद् वैचित्र्यमालम्बते।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-२/१)

दिशाओं में व्याप्त अन्धकार क्षीण हो रहा है, सर्वत्र प्रकाशपुञ्ज प्रसारित हो रहा है, कुमुदिनी-समूह मुरझा रहा है, कमलदल प्रस्फुटित हो रहा है, नक्षत्रगण आकाशरूप समुद्र में डूब रहे हैं

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

और सभी दिशाएँ प्रकाशित हो रही हैं, इस प्रकार प्रचण्ड किरण-समूह वाले भगवान सूर्य के उदित होने पर यह संसार वैचित्र्य का आलम्बन कर रहा है, अर्थात् अत्यंत मनोहारी प्रतीत हो रहा है। प्रस्तुत पद्य में सूर्य देव के उदित होने का स्वाभाविक वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलङ्कार है॥

११."निदर्शना"

निदर्शना में उदाहरण देकर किसी बात को स्पष्ट किया जाता है। कौमुदीमित्रानन्दरूपक में यह अलंकार विचारों को स्पष्ट करने में सहायक होता है। निदर्शनालङ्कार का लक्षण:-

वाक्यार्थयोः सदशयोरैक्यारोपो निदर्शना।
यद्वातुः सौम्यता सेयं पूर्णेन्दोरकलङ्कता।। (कुवलयानन्द-५३)

कौमुदीमित्रानन्दन में निदर्शना का उदाहरण:-

क्व सा सिद्धश्रेणिप्रणतिसुभगा खेचरदशा
क्व चायं सण्टङ्कस्त्रिभुवनमनः शोकरसिकः।
न यो वाचः पात्रं भवति न दृशो नापि मनस-
स्तमप्यर्थं क्रुद्धो हतविधिरकाण्डे घटयति।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-२/३)

कहाँ तो वह सिद्धगण द्वारा अर्पित प्रणाम से सुखद आकाश में विचरण करने वाली आनन्दात्मिका अवस्था और कहाँ यह तीनों लोकों को मनस्ताप का अनुभव कराने वाला वज्रकील बन्धन। विधाता भी अघटितघटनापटु है जो वाणी चक्षु और मन के लिए सर्वथा अगोचर (कल्पनातीत) घटनाओं को घटित कर देते है। यहाँ पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध के वाक्यार्थों में कोई सम्बन्ध दिखाई नहीं देता परन्तु इसका पर्यवसान दोनों के उपमानोपमेय भाव में होता है इसलिए निदर्शना अलङ्कार है।

१२."दीपक"

दीपक का प्रयोग विचारों को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। इस काव्य में यह अलंकार संवादों को प्रकाश देता है। अप्रस्तुत और प्रस्तुत पदार्थ का एक धर्म से सम्बन्ध हो अथवा अनेक क्रियाओं में एक कारक हो तो दीपक अलङ्कार होता है। दीपकालङ्कार का लक्षण:-

अप्रस्तुतप्रस्तुतयोर्दीपकं तु निगद्यते।
अथ कारकमेकं स्यादनेकासु क्रियासु चेत्।। (साहित्यदर्पण-१०/४८-४९)

कौमुदीमित्रानंद में दीपक अलङ्कार का उदाहरण :-

विश्राम्यत्पथिकाः क्वचित्, क्वचिदपि क्रीडाचलोपत्यका-
क्रीडत्पौरपुरन्ध्रयो, गिरिसरिज्झङ्कारताराः क्वचित्।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

एते ते रमयन्ति कोकिलकुलव्याहारवाचालितो-
द्यानक्षोणिरूहः पुरीपरिसराः श्रोत्राणि नेत्राणि च।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-४/८)

कहीं पर विश्राम करते हुए पथिक जन (दिखलाई पड़ रहे हैं) कहीं क्रीड़ा-पर्वतो (आमोद हेतु निर्मित बनावटी पर्वतों) की उपत्यकाओं (तलहटी) में नगरवधुएँ क्रीडा करती हुई (दिखलाई पड़ रही हैं), कहीं पहाड़ी नदियों की कलकलध्वनि (सुनाई पड़ रही है) और कहीं उपवन में वृक्ष कोयलों की कूक से शब्दायमान हो रहे हैं- इस प्रकार यह नगर-परिसर आँखों एवं कानों को आनन्दित कर रहा है। प्रस्तुत पद्य में 'रमयन्ति' यह एक ही क्रियापद है उसके साथ पथिक जन, नगरवधुएँ नदियों की कलकलध्वनि एवं उपवन के वृक्ष, अनेक कारको का सम्बन्ध होने से यह क्रिया दीपक का उदाहरण है।

१३.“विशेषोक्ति”

इसमें किसी विशेष बात या भावना को एक विशेष रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
विशेषोक्त्यलङ्कार का लक्षण:-
कार्यजनिर्विशेषोक्तिः सति पुष्कलकारणे।
हृदि स्नेहक्षयो नाभूत् स्मरदीपे ज्वलत्यपि।। (कुवलयानन्द-८३)
कौमुदीमित्रानंद में विशेषोक्त्यलङ्कार का उदाहरण :-
यत् पोतस्य सुवर्ण-मौक्तिकनिधेर्भङ्गो वियोगो निजै-
र्यन्मातापितृभिर्विदेशवसतिर्येयं न तद् बाधते
मिथ्या यः पुनरिन्दुशुभ्रयशसो गोत्रस्य लक्ष्मैकभू-
रैकागारिकलिप्लवः प्रतिमुहुर्दुः खाकरोत्पेष माम्।। (कौमुदीमित्रानन्दरुपक-४/१६)

स्वर्ण और मोतियो से भरे जहाज का समुद्र मे डूब जाना और विदेश मे रहते हुए अपने माता पिता (आदि बन्धुजनों) से वियोग मुझे व्यथित नहीं कर रहा है, किन्तु अपने चन्द्रमासदृश धवल यश वाले गोत्र (वंश) के लिए कलङ्कमात्रस्वरूप चोर होने का मिथ्या आरोप मुझे अत्यधिक व्यथित कर रहा है। प्रकृत पद्य में जहाज के डूब जाने एवं माता पिता आदि बन्धुजनों से वियोग रूपी कारण के होते हुए भी व्यथित होना रूपी कार्य न होने से विशेषोक्ति अलङ्कार है।

“निष्कर्ष:”

कौमुदीमित्रानन्दरूपक में विभिन्न अलंकारों का प्रयोग काव्य की गहराई, लय, और सौंदर्य को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये अलंकार न केवल काव्य के भाव को स्पष्ट करते हैं, बल्कि पाठक के मन में गहरे प्रभाव भी छोड़ते हैं। इनकी विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि काव्य रचना में अलंकारों का समावेश अनिवार्य है, जो काव्य की विशेषता को और भी

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:10(2), October 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

निखारता है। इस प्रकार, कौमुदीमित्रानन्दरूपक में अलंकारों का प्रयोग इसे एक उत्कृष्ट काव्य बना देता है, जो पाठकों को एक नई दृष्टि प्रदान करता है। काव्य की यह विशेषता इसे न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है, बल्कि यह संस्कृत साहित्य में एक अद्वितीय स्थान भी प्रदान करती है। इस प्रकार, अलंकारों का गहरा अध्ययन और उनकी विवेचना कौमुदीमित्रानन्दरूपक को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सन्दर्भग्रन्थ:-

१. कौमुदीमित्रानन्दरूपकम्, रामचन्द्रसुरि, अनु. श्यामानन्द मिश्र, पार्श्वनाय विद्यापीठ, वाराणसी, १९९८
२. कौमुदीमित्रानन्द, रामचन्द्रसूरि, सिन्धी जैन ग्रन्थमाला, गुजरात, १९८२
३. साहित्यदर्पण,विश्वनाथ, व्याख्या, शालीग्राम शास्त्री,मोलीलाल बनारसीदास, वाराणसी, १९५६
४. साहित्यदर्पण, विश्वनाथ, व्याख्या, शेषराज शर्मा 'रेग्मी',कृष्णदत्त संस्कृत सीरीज, वाराणसी, १९८५
५. काव्यप्रकाश, मम्मटाचार्य, व्याख्या. आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल ग्रन्थमाला, वाराणसी, १९९०
६. काव्यालङ्कार,भामह, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, १९६२
७. काव्यादर्श, दण्डी,विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी, १९८४
८. कुवलयानन्द, अप्पय्यदीक्षित, चौखम्बा विद्याभवन, बनारस, १९५६